INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 1, January 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

पौराणिक कालीन शूरसेन जनपद / मथुरा जनपद

Dr. Chandra Shekhar
Associate Professor
Department of Histroy
Singhania University
Pacheri Bari-Jhunjhnu
Rajasthan-333515

Ranvir Singh
Research Scholar
Histroy Department
Singhania University
Pacheri Bari (Rajasthan)

Email Id- ranvirsinghjadoun@gmail.com

शूरसेन जनपद :-

छठी शताब्दी ईसा पूर्व का एक प्रमुख प्राचीन भारतीय जनपद हुआ हुआ करता था जो वर्तमान में उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र (मथुरा के आसपास) में स्थित था | इसकी राजधानी मथुरा थी, इसे यूनानी लेखक मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक इंडिका में 'मेथोरा' के नाम से भी उच्चारित किया है, और इसके आसपास की जगह को 'क्लासीबोरा' और यमुना को 'जोबारेस' के नाम से उच्चारित किया है[1] | यह यदुवंशी क्षत्रियों का राज्य था जिसका संबंध भगवान् श्रीकृष्ण से है | बौद्ध ग्रन्थ 'अगुत्तर निकाय' और जैन ग्रन्थ भगवती सूत्र के अनुसार यह प्राचीन 16 महाजनपदों में से एक था[2] | यह क्षेत्र कृष्ण भक्ति और यादव संस्कृति का प्रमुख केंद्र था |

ऐसा कहा जाता है कि भगवान् श्रीकृष्ण के पितामह और वसुदेव के पिता शूरसेन के नाम पर इस राज्य का नाम शूरसेन पड़ा, दूसरा पौराणिक तर्क यह भी दिया जाता है कि यदुवंशियों के एक प्राचीन राजा का नाम कार्तवीर्य अर्जुन या सहस्त्रार्जुन था | उसके राज्य का विस्तार नर्मदा से हिमालय तक था, जिसमें यमुना तट का प्रदेश भी सम्मलित था | सहस्त्रार्जुन के सौ पुत्रों में से एक का नाम शूरसेन भी था, '**लिंगपुराण**' के अनुसार इसी शूरसेन के नाम पर इस प्रदेश का नाम '**शूरसेन**' प्रसिद्ध हुआ था |[3]

सीमा विस्तार :-

श्रीकृष्ण दत्त वाजपेयी द्वारा लिखित- 'ब्रज का इतिहास' प्रथम भाग में वर्णन इस प्रकार है- वर्तमान मथुरा तथा उसके आस-पास का प्रदेश जिसे 'ब्रज' कहा जाता है, (प्राचीन काल में 'शूरसेन जनपद के नाम से प्रसिद्ध हुआ था इसकी राजधानी मधुरा या मथुरा नगरी थी | शूरसेन जनपद की सीमाएँ समय –समय पर बदलती रहीं | कालान्तर में मथुरा नाम से ही यह जनपद विख्यात हुआ) | ईस्वी सातवीं शताब्दी में जब चीनी यात्री व्हेनसांग (हुएन-सांग) मथुरा आया तब उसने लिखा है कि मथुरा राज्य का विस्तार 5000 ली (लगभग 833 मील) था | इस वर्णन से पता चलता है कि सातवीं शती में मथुरा राज्य के अंतर्गत वर्तमान मथुरा-आगरा जिलों के अतिरिक्त आधुनिक भरतपुर तथा धौलपुर जिले और ऊपर के मध्य भारत का उत्तरी लगभग आधा भाग रहा होगा | दक्षिण-पूर्व में मथुरा राज्य की सीमा जेजाकभुक्ति (जिझौती) की पश्चिमी सीमा से तथा दक्षिण-पश्चिम में मालवा राज्य की उत्तरी सीमा से मिलती रही होगी | सातवीं शती के बाद से मथुरा राज्य की सीमाएँ घटती गयी | इसका प्रधान कारण समीप के कन्नौज राज्य की उन्नति थी, जिसमें मथुरा तथा अन्य पड़ोसी राज्यों के बड़े भू-भाग सम्मलित हो गये |

प्राचीन शूरसेन या मथुरा जनपद का प्रारम्भ में जितना विस्तार था उसमें 'हुवेनसांग के समय तक क्या हेर-फेर होते गए , इसके सम्बन्ध में हम निश्चत रूप से नहीं कह सकते, क्योंकि हमें प्राचीन साहित्य आदि में ऐसे प्रमाण नहीं मिलते जिनके आधार पर विभिन्न कालों में इस जनपद की लम्बाई-चौड़ाई का ठीक–ठीक पता लग सके | प्राचीन साहित्यिक उल्लेखों से जो कुछ पता चलता है वह यह कि शूरसेन या मथुरा प्रदेश के उत्तर में कुरुदेश (आधुनिक दिल्ली और उसके आस-पास का प्रदेश) था, जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ तथा हस्तिनापुर थी | दक्षिण में चेदि राज्य (आधुनिक बुन्देलखण्ड तथा उसके समीप का कुछ भाग) था जिसकी राजधानी का नाम शुक्तिमती नगर था | पूर्व में पांचाल राज्य (आधुनिक रुहेलखण्ड) था, जो दो भागों में बँटा हुआ था –उत्तर पांचाल तथा दक्षिण पांचाल | उत्तर पांचाल राज्य की राजधानी अहिच्छत्र (बरेली जिले में वर्तमान रामनगर) और दक्षिण पांचाल राज्य की राजधानी काम्पिल्य (आधुनिक कंपिल, जिला फर्रुखाबाद) थी | शूरसेन के पश्चिम वाला मत्स्य (आधुनिक अलवर रियासत तथा जयपुर का पूर्वी भाग) था | इसकी राजधानी विराट् नगर (आधुनिक वैराट,जयपुर में) थी |

आजकल मथुरा नगर सहित वह भू-भाग जो श्रीकृष्ण के जन्म और उनकी विशेष लीलाओं से सम्बन्धित हैं, ब्रज कहलाता है | इस प्रकार 'ब्रज' वर्तमान मथुरा मण्डल और प्राचीन शूरसेन प्रदेश का अपर नाम और उसका एक छोटा रूप है | इसमें मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, महावन, बलदेव, नंदगाँव, बरसाना, डीग और कामवन आदि श्रीकृष्ण के सभी लीलास्थल सम्मिलित हैं | इस ब्रज को चौरासी कोस माना जाता है |

'ब्रज' अत्यन्त प्राचीन जनपद है | यह सदा से एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में प्रसिद्ध रहा है | यधपि यह समय-समय पर विभिन्न नामों से बोला एवं लिखा जाता रहा है जैसे- 1. मध्य देश 2. ब्रह्मर्षि प्रदेश 3. शूरसेन प्रदेश 4. मथुरा मण्डल 5. ब्रज, ब्रज जनपद अथवा ब्रजमण्डल |

इसकी सीमाओं के सम्बन्ध में फेड्रिक सालमन ग्राउस (एफ.एस. ग्राउस) ने 'मथुरा-ए डिस्ट्रिक मेमोयर' में एक दोहा का उल्लेख किया है | श्रीनारायणभट्ट जी (सन् 1560 के लगभग) ने भी अपने ग्रन्थ **'ब्रजभक्ति विलास'** में इसी दोहे का उल्लेख किया था [4]:-

'इत 'वर' हद, उत 'सोन' हद इत 'शूरसेन' को गाँम |
ब्रज चौरासी कोस में, मथुरा मण्डल धाम ||

शूरसेन शासक कंस :-

कंस के समय की मथुरा नगरी का स्वरुप व उसकी झलक पौराणिक वर्णनों में भली भांति देखी जा सकती है | पौराणिक कालीन मथुरा एक समृद्व पुरी थी, धन धान्य से संपन्न नगरी थी | भगवान श्री कृष्ण के जन्म से पूर्व शूरसेन जनपद का शासक कंस था जो अंधकवंशी महाराज उग्रसेन का पुत्र था | बचपन से ही कंस स्वेच्छाचारी था, बड़ा होने पर वह जनता को बहुत प्रकार से कष्ट पँहुचाने लगा था | उसे यदुवंशियों की गणतन्त्र प्रणाली पसंद नहीं थी वह एक स्वेच्छाचारी राजतन्त्र स्थापित करना चाहता था | उसने अपनी शक्ति बढ़ाकर अपने पिता उग्रसेन को जो शूरसेन जनपद के शासक थे, को सिंहासन से हटाकर जबरन सत्ता पर कब्ज़ा कर लिया और स्वयं शूरसेन जनपद का अधिपति बन गया | इससे जनता में रोष व्याप्त हो

गया था लेकिन बेचारी जनता कर भी क्या सकती थी | वह अति शीघ्र ही एक निरंकुश शासक बन गया था और प्रजा को भिन्न भिन्न तरह से प्रताड़ित करने लगा था | इससे प्रजा में कंस के प्रति गहरा असंतोष फ़ैल गया, बहुत समय तक जनता उसके अत्याचारों को सहती रही और उसके विरुद्ध कुछ भी करने में असमर्थ थी |

कंस की इस शक्ति का कारण था कि उसे आर्यावर्त के तत्कालीन सर्वप्रतापी राजा व कंस के ससुर जरासंध का सहयोग प्राप्त था | जरासंध पौरव वंश (पुरुवंश) का था और मगध के विशाल साम्राज्य का शासक था | उसके अनेक शक्तिशाली राज्यों के राजाओं से मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर रखे थे, जिनके द्वारा उसने अपनी शक्ति को बढ़ा रखा था | जरासंध ने अपनी दो लड़कियां अस्ति और प्राप्ति का विवाह कंस के साथ कर दिया था और इस प्रकार उसने शूरसेन प्रदेश के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध जोड़ लिया था | चेदि के यादव वंशी राजा शिशुपाल को भी जरासंध ने अपना गहरा मित्र बना लिया था | इधर उत्तर-पश्चिम में उसने कुरुराज दुर्योधन को अपना सहायक बनाया | पूर्वोत्तर में उसने आसाम **(प्रागज्योतिषपुर)** के राजा भगदत्त से भी उसने अपना मित्रवत व्यवहार किया |[5]

कारुष देश के राजा दन्तवक्र भी उसका सहायक था, वह बड़ा प्रतापी राजा था और माया युद्ध में बड़ा प्रवीण था | करंभ का राजा मेधवाहन, युधिष्ठिर का मामा पुरुजित,[6] अंग, बंग,पुण्ड्र किरात का राजा वासुदेव भी उसके अधीन थे | इस प्रकार उत्तर भारत के प्रमुख राजाओं से मित्रता कर जरासंध ने अपने पड़ोसी राज्यों-काशी, कौशल आदि राज्यों पर भी अपना अधिकार जमा लिया था | कुछ समय बाद कलिंग का राज्य भी उसके अधीन हो गया था | अब जरासंध पंजाब से लेकर आसाम और उड़ीसा तक के प्रदेश का सबसे अधिक प्रभावशाली शासक बन गया था |[7] और उसने बहुत से राजाओं को पकड़कर कारागार में डलवा दिया था, मथुरा में कंस के अत्याचारों से शूरसेन जनपद के निवासी बहुत परेशान थे |

शूरसेन राज्य में भगवान श्री कृष्ण का अवतरण :-

भगवान् श्री कृष्ण यदुकुल के वृष्णीवंशी शूरसेन पुत्र वसुदेव और अन्धकवंशी कंस की चचेरी बहन व देवक की पुत्री देवकी के पुत्र थे | पुराणों के अनुसार कंस अपनी चचेरी बहन देवकी को बहुत स्नेह करते थे, देवकी की शादी कंस ने बड़ी धूम धाम के साथ वसुदेव जी के साथ की | शादी के उपरांत देवकी और वसुदेव जी को जब कंस रथ में बिठाकर उन्हें बड़े प्यार और मंगल गीतों के साथ विदा कर रहा था | उस दौरान अचानक से कंस को नारद जी द्वारा भविष्यवाणी हुयी हे कंस आज तू जिस बहन को जितनी धूम धाम के साथ विदा कर रहा है उसकी आठवीं संतान के हाथों तेरी मृत्यु होगी | **तत्रैषा देवकी या ते मथुरायां लघुस्वसा | योअस्यां गर्भोअष्टम: कंस स ते मृत्युर्भविष्यति ||**[8] | यह भविष्यवाणी सुन कंस बहुत चिंतित हो गया और उसने अपनी प्रिय बहन देवकी को मारने के लिए अपना खड़ग निकाल लिया और देवकी की गर्दन पर रख दिया यह द्रश्य देखकर सभी चकित रह गए कि जो कंस अभी तक देवकी को इतना प्यार करता था, और धूम धाम से शादी करने के वाद विदा कर रहा था वही कंस अकस्मात राक्षस हो गया था | वासुदेव की काफी सूझ-बूझ के कारण व वसुदेव जी द्वारा कंस को देवकी के प्रत्येक संतान को पैदा होते ही सोंपने का वचन देने के पश्चात् कंस कुछ शांत हुआ और वसुदेव व देवकी को घर जाने दिया गया | परन्तु सभी गुप्तचरों व सैन्य अधिकारियों को सन्देश दिया गया कि दौनों पर नजर रखें व उनको मथुरा से कहीं भी बाहर न जाने दिया जाय |[09] देवकी से उत्पन्न छ: पुत्रों को कंस ने मार डाला,

सातवें बच्चे (राम अथवा बलराम) को योगमाया द्वारा देवकी के गर्भ से वसुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी के गर्भ में संकर्षित कर दिया गया जिसका कंस को पता ही नहीं चला[10] | हरिवंश व अन्य पुराणों के अनुसार भी बलराम जी सर्वप्रथम देवकी के गर्भ में आये थे, किन्तु दैवीय शक्ति द्वारा वे वसुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी के गर्भ में स्थानांतरित कर दिए गए | इस घटना के कारण ही बलदेव (बलराम) का नाम **'संकर्षण'** पड़ा | रोहिणी पहले ही नंदगोप के यहाँ सरंक्षण में थी[11] | जब कंस को देवकी के सातवें पुत्र की कोई भी जानकारी नहीं मिली तो कंस ने क्रोधित होकर दौनों को कारागार में बंदी बनाकर डाल दिया[12] | अब वह आठवीं संतान के लिए बहुत सतर्क हो गया | यथा समय **भाद्र मास के कृष्ण अष्टमी की आधी रात** को देवकी की आठवीं संतान कृष्ण का जन्म कारागार में हुआ[13] |

भाद्र मास के कृष्ण अष्टमी की आधी रात को मथुरा व सम्पूर्ण ब्रज में भयंकर मूसलाधार बारिश भी हो रही थी और यमुना जी अपने रोद्र रूप में थी | कंस के महलों से लेकर हर जगह पानी ही पानी भरा हुआ नजर आ रहा था सभी आवागमन बंद हो गया था पहरेदार अपने घरों को पानी में बहने से बचाने के लिए और परिवारिजनों की सुरक्षा के लिए तितर वितर हो गए थे | उसी दिन गोकुल में नन्द गोप के यहाँ एक कन्या ने जन्म लिया था जिसकी कि सांसे भी नहीं चल रही थीं जो कि जीवित भी नहीं थी | नन्द की पत्नी यशोदा अचेत अवस्था में पड़ी हुई थीं जिनको कि अपने नवजात बच्चे की कोई जानकरी भी नहीं थी | उसी दौरान देवकी से उत्पन्न नवजात शिशु कृष्ण को लेकर वसुदेव जी कंस के भय से गोकुल में नन्द गोप/अहीर के घर पहुंचे | नन्द ने वसुदेव को देखा और वसुदेव ने नन्द को कहा सुनो नन्द देवकी ने अपनी आठवीं संतान को जन्म दे दिया है जिसकी हम वर्षों से प्रतीक्षा कर रहे थे - देवकी का आठवां पुत्र !" वसुदेव ने अपने सिर से मंजूषा उतारी | वसुदेव ने नन्द से कहा ध्यान से सुनो | इस शिशु की रक्षा करनी होगी चाहे कितने भी संकट झेलने पड़ें, किन्तु इसे जीवित रखना ही है क्योंकि इसके जीवित रहने पर मेरा तुम्हारा और सभी यादवों के इस जनतांत्रिक संघ का और धर्म तथा न्याय का अस्तित्व संभव है | इसे मेरा नहीं अपना पुत्र समझकर पालन-पोषण करना | यह राजकुमार नहीं ग्वाला बने, गोप बने जो भी बने बनने देना | गोप बन जाये तो अच्छा है जिससे कंस को संदेह भी न हो कि यह देवकी का पुत्र है | इसे बलराम और रोहिणी से भी दूर ही रखना वे भी न जान पायें यह कौन है | स्वयं इसे भी न पता चले कि यह तुम्हारा पुत्र नहीं है | नन्द ने बालक को यशोदा के पास लिटा दिया और मृत प्राय कन्या को उठाकर वसुदेव को दिया जिससे कि कंस को यह आभास न हो कि देवकी ने अपने पुत्र को कहीं छुपा दिया है | नन्द गोप की पत्नी यशोदा के गर्भ से उत्पन्न बालिका (योगमाया) को उसके घर से लाकर वसुदेव जी ने यह प्रकट कर दिया कि देवकी के गर्भ से कन्या उत्पन्न हुई है | कंस के हाथों में जाते ही वह नवजात कन्या दुष्ट कंस के हाथों से छूटकर अद्रश्य हो गयी, और कन्या ने घोषणा की कंस तुझे मरने वाला ब्रज में प्रकट हो चुका है | कंस उस अबोध बालिका की भविष्यवाणी सुन इतना घबरा गया कि वह अब उस बालक की तलाश में लग गया | कंस को भय व्याप्त हो गया कि अब उसे प्रत्येक बालक में अपना काल दिखाई देने लगा था[14] |

भगवान् श्री कृष्ण द्वारा कंस वध :-

श्री कृष्ण समय के साथ साथ बड़े होने लगे और नन्द गोप के यहाँ गोकुल में भिन्न भिन्न क्षेत्रों में अनेक आश्चर्यजनक साहसिक कार्य करने लगे | उन्होंने अनेक कार्य अदम्य साहस और शूर वीरता के किये और ग्वाल वालों को अनेक बिपत्तियों से बचाया | जंगली जाति के कुछ हिंसक दैत्यों जैसे धेनुकासुर, प्रलम्बासुर, केशी आदि अनेक राक्षसों का वध किया | जिस समय इंद्र को अभिमान हो गया था तब श्री

कृष्ण ने इंद्र के अभिमान को कुचलकर इंद्र के स्थान पर गोवर्धन पर्वत की पूजा का विधान बनाया | श्री कृष्ण और उनके साथी गोपों को गोवर्धन पर्वत का महत्व ज्ञात था अत: उन्होंने इंद्र के स्थान पर गोवर्धन पर्वत कि उपासना प्रचलित की | श्री कृष्ण ने कालिय नाम के दैत्य जो अपने अत्याचारों व हिंसक कृत्यों से स्थानीय जनता को त्रस्त किए हुए था, का मर्दन किया और उसे वह भूभाग त्यागने के लिए बाध्य किया[15] |

इस प्रकार श्री कृष्ण और बलराम के वीरतापूर्ण कृत्यों की चर्चा मथुराधिपति कंस के पास तक पहुँच गयी और नारदजी ने कंस को अवगत कराया कि जो कन्या तुम्हारे हाथो से छूटकर आकाश में चली गयी, वह तो यशोदा कि पुत्री थी, और जो श्री कृष्ण हैं वे देवकी के पुत्र हैं | बलराम जी रोहिणी के पुत्र हैं उन्होंने ही तुम्हारे अनुचर दैत्यों का वध किया है | नारद जी की यह बात सुन कंस की एक एक इन्द्रिय क्रोध के मारे कांप उठी | कंस ने अब उन दोनों को किसी बहाने मथुरा बुलाने की योजना बनायी जिससे कि वह उनका वध कर सके | उसने अपने उद्वेश्य की पूर्ति के लिए स्वफल्क के पुत्र अक्रूर को उन दोनों को मथुरा लिवा कर लाने का आदेश दिया | आदेश पाकर अक्रूर जी योजना अनुसार नन्द गोप के पास पहुँचे, अक्रूर जी कंस के प्रधान मंत्रियों में से एक थे | ये वसुदेव जी के कुटुंब के नाते से भाई तथा कंस के चाचा लगते थे[16] | जिस शाम अक्रूर जी गोकुल में पंहुचे थे, नन्द बाबा बहुत दुखी थे और पूरी रात जब वे सोये नहीं तो यशोदा ने उनकी परेशानी का कारण जानना चाहा, लेकिन नन्द जी कुछ भी बता पाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे | अतंत: यशोदा के बार पूछे जाने पर नन्द जी को बताना पड़ा कि अक्रूर बलराम ही नहीं बल्कि कान्हा को भी अपने साथ लेने आया है | कान्हा हमारा नहीं वसुदेव का ही पुत्र है देवकी नंदन है, और जिसे तुमने गर्भ में पाला था वह कन्या योगमाया थी | इस बात को सुनकर यशोदा बहुत रोयीं, दुखी हुयी और अपनी सुध बुध खो बैठीं[17] | अक्रूर जी ने नन्द गोप से कंस का आदेश उनको सुनाया और कृष्ण बलराम को मथुरा भेजने के लिए कहा | नन्द गोप का सारा क्षेत्र उनकी स्त्री, प्रजाजन, गोपजन और गोपियाँ श्री कृष्ण के वीरोचित कार्यों और उनके अनुपम सौन्दर्य से इतने प्रभावित व प्रेमासक्त थे, कि अक्रूर की बातें सुनकर उनको घोर पीड़ा हुई | सभी गोप जन श्री कृष्ण को अहीरों की बस्तियों से दूर छोड़कर जाने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थे | अक्रूर के इस प्रस्ताव से समस्त गोकुल में कोहराम मच गया | श्री कृष्ण ने अनेक भांति से गोकुल वासियों को समझाया और अपने भाई बलराम को लेकर अक्रूर के साथ मथुरा चल दिए | कुछ अन्य गोप भी उनके साथ आये, दोनों भाईयों ने रात्रि को अक्रूर के घर विश्राम किया और प्रात: कौतूहलवश अपने साथियों सहित नगर का भ्रमण करने निकल पड़े | नगर निवासी दोनों भाइयों के अद्भुत सौन्दर्य और वीरता से अत्यंत प्रभावित हुए और चारों ओर उनका सत्कार होने लगा[18] | मार्ग में उनकी कुब्जा दासी से भेंट हुयी जो कंस के यहाँ चन्दन लेपन के लिए जाया करती थी | उन्होंने कुब्जा के चन्दन लेपन से स्वयं लेपन किया और उसकी शारीरिक विकृति को सुधार दिया | इसके उपरांत वे नगर में भ्रमण करते हुए कंस के महल के दरवाजे पर पहुँचे[19] |

कंस ने द्वार पर एक मदोन्मत्त कुवलियापीड़ नामक हाथी खड़ा कर रखा था | योजना उस हाथी के द्वारा उन दोनों भाइयों को कुचलकर वध कराने की थी | परन्तु बात की बात में दोनों भाइयों ने उस हाथी के दांत उखाड़ कर फेंक दिए तथा उसका प्राणांत कर दिया | फिर कंस के दो मल्लों ने जिनके नाम चाणूर तथा मुष्टिक थे, कृष्ण और बलराम को चुनौती दी, लेकिन उनको भी दोनों भाइयों ने मार दिया | इस पर कंस उत्तेजित हो गया और वह श्री कृष्ण तथा बलराम को मारने के लिए अपने सैनिकों को आज्ञा देने वाला ही था कि श्री कृष्ण ने उसको मंच से गिराकर भूमि पर डाल दिया और उस पर ऐसा मार्मिक प्रहार

किया कि उसके प्राण पखेरू उड़ गये | अपना कार्य करने के उपरांत सर्वप्रथम दोनों भाई अपने माता-पिता से मिले | वसुदेव और देवकी अपने प्यारे बच्चों से मिलकर हर्ष से गदगद् हो गए, श्रीकृष्ण जी ने उन्हें जेल से बन्धनमुक्त किया[20] |

कंस के वध के बाद मथुरावासियों ने श्री कृष्ण से राजकाज सँभालने को कहा परन्तु श्री कृष्ण ने कंस के स्वेच्छाचारी शासन का अंत करके स्वयं राजा बनना स्वीकार न किया और अंधक-वृष्णियों के संघीय राज्य की स्थापना कर दी | उन्होंने कंस के पिता उग्रसेन को ही राज प्रमुख नियुक्त किया |

अब कंस के अत्याचारों से तो सबको मुक्ति मिल चुकी थी लेकिन कंस वध से उत्पन्न संकटों से अभी जूझना था | कंस की मृत्यु का समाचार पाकर मगध नरेश जरासंध बहुत क्रुद्ध हो गया | वह कंस का श्वसुर था, जरासंध अपने समय का महान साम्राज्यवादी और क्रूर शासक था | उसने कितने ही छोटे-मोटे राजाओं का राज्य हड़पकर उन राजाओं को बंदी बना लिया था | जरासंध ने कंस को अपनी लड़कियों की शादी संभवतः इसलिए की थी जिससे कि पश्चिमी राज्यों में अपनी धाक जमा सके और उधर गणराज्यों की शक्ति कमजोर पड़ जाये | अपने जमाता और सहायक का इस प्रकार से वध होते देख जरासंध का क्रुद्ध होना स्वाभाविक था | अब उसने शूरसेन जनपद पर चढ़ाई करने का विचार किया | शूरसेन और मगध के बीच युद्ध का विशेष महत्व है इसलिए हरिवंश आदि पुराणों में इसका वर्णन विस्तार से दिया है[21] |

सन्दर्भ सूची :-

(1) मेगस्थनीज की इंडिका |
(2) बौद्ध ग्रन्थ अगुत्तर निकाय एवम् जैन ग्रन्थ भगवती सूत्र |
(3) ब्रज का इतिहास, द्वितीय खण्ड, प्रभु दयाल मीतल, पृष्ठ सं. 7 |
(4) ब्रज का इतिहास, प्रथम भाग, कृष्ण दत्त बाजपेयी |
(5) ब्रज का इतिहास, कृष्ण दत्त बाजपेयी, पृष्ठ सं. 29 |
(6) यदुवंश का इतिहास, महावीर सिंह यदुवंशी, पृष्ठ सं. 127 |
(7) ब्रज का इतिहास, कृष्ण दत्त बाजपेयी, पृष्ठ सं. 29 |
(8) हरिवंश पुराण, विष्णुपर्व, पृष्ठ सं. 277 |
(9) वसुदेव, पृष्ठ सं.7,11,14. नरेंद्र कोहली |
(10) वसुदेव, पृष्ठ स.138. नरेंद्र कोहली |
(11) यदुवंश का इतिहास, महावीर सिंह यदुवंशी पृष्ठ स.128 |
(12) वसुदेव, पृष्ठ स.160. नरेंद्र कोहली |
(13) श्री हरिवंश पुराण, विष्णु पर्व, चौथा अध्याय पृष्ठ स.287, व वसुदेव, पृष्ठ स.222,225 . नरेंद्र कोहली |
(14) श्रीमद् भागवत महापुराण, व वसुदेव, पृष्ठ स.226,228,229,230. नरेंद्र कोहली (श्रीमद् भागवत महापुराण)
(15) श्रीमद्भागवत महापुराण, द्वितीय खण्ड, दशम स्कंध (पूर्वार्ध) |

(16) श्रीमद्भागवत महापुराण, द्वितीय खण्ड, दशम स्कंध ३६ वाँ अध्याय (पूर्वार्ध) |
(17) वसुदेव, पृष्ठ स.402,403,404. नरेंद्र कोहली |
(18) श्री हिरवंश पुराण, सत्ताइसवाँ अध्याय, पृष्ठ सं.389-390 |
(19) श्री हिरवंश पुराण, सत्ताइसवाँ अध्याय, पृष्ठ सं.39 |
(20) (अ) श्री हिरवंश पुराण, सत्ताइसवाँ अध्याय, पृष्ठ सं.389-390, (ब) श्रीमद् भागवत महापुराण (स) वसुदेव, पृष्ठ स.478, नरेंद्र कोहली |
(21) यदुवंश का इतिहास महावीर सिंह यदुवंशी पृष्ठ सं. 130 |

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.